हिंदी गजल में पर्यावरण चेतना

कु. स्वप्ना शंकर बेंडकुळे
एम.ए.एबी.एड, सेट, पी.एचडी पोथार्थी
मार्गदर्शकः डॉ.जालिंदर वाय इंगले,
अनुसंधान केंद्रः के.टी.एच.एम.महाविद्यालय, नाशिक
ईमेल : dreamssapana1988@gmail.com, मो.नं. ९६७३२६८६१७

प्रकृति की श्रेष्ठ कृति मनुष्य को माना जाता है। मानव जीवन एवं पर्यावरण एक दूसरे से जुडे हुए है। जहाँ मानव का अस्तित्व पर्यावरण से है वही मानव द्वारा निरंतर किए जा रहे पर्यावरण के विनाश से हमें भविष्य की चिंता सताने लगी है। हमारी संस्कृति ही पर्यावरण की देन है, क्योंकि प्रकृति के घटकों में जो तालमे, रहे, वही तालमेल वह मनुष्य के जीवन में संतुलित दिखाया देता रखने की सीख वह देते है। हमारे प्राचीन वेदों ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद एवं अथर्ववेद में पर्यावरण के महत्व को दर्शाया गया है। सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर की बनाई श्रेष्ठ कृति प्रकृति के प्रति अपने भावों को व्यक्त करने के लिए मनुष्य ने कई प्रयत्न किये। इसी पर्यावरण के कारण मनुष्य अपने सर्वांगीण विकास को प्राप्त कर सका है।

हिंदी साहित्य में आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक प्रकृति को हमेशा विशिष्ट स्थान मिला है। पर्यावरण चेतना की समृध्द परंपरा हमारे साहित्य में देखने को मिलती हैए वह आज भी उतना ही प्रासंगिक है । काव्य मनुष्य के संवेदनाओं को भावों को सुंदर तरीके से प्रकट करता है ।

काव्य का हिंदी साहित्य में अपना एक महत्वपूर्ण स्थान है। उसी प्रकार हिंदी काव्य विधा में गजल का विशिष्ट महत्व है। हिंदी गलजकारों ने जीवन के विविध पक्षों को रेखांकित करते हुए प्रकृति के विविध घटकों को माध्यम बनाया है। हिंदी गजल में प्रकृति के सुंदर एवं प्रलयकारी दोनों ही पर्यावरणीय रुपों के चित्रण मिलते है । हिंदी गजल में पर्यावरण चेतना का अध्ययन करने से पूर्व गजल विधा का अध्ययन निम्नलिखित स्पष्ट किया गया है।

• गजल : शब्दार्थ

वैसे देखा जाए तो गजल एक सेक्युलर काव्य विधा है। गजल पार्शियन और अरबी भाषाओं से उर्दू में आयी । हिंदी गजल भी उर्दू गजल की परंपरा से प्रभावित है । कुछ लोगों का मानना रहा है कीए गजल का आदि स्त्रोत संस्कृत है । किन्तु उनका यह मत आधारहिन रहा है । दरअसल ''गजल अरबी साहित्य की प्रसिध्द काव्यविधा है जो बाद में फारसीए उर्दूए नेपाली और हिन्दी साहित्य में भी बेहद लोकप्रिय हुई । संगीत के क्षेत्र में इस विधा को गाने के लिए इरानी और भारतीय संगीत के मिश्रण से अलग शैली निर्मित हुई।''[१]

गजल मुलतः प्रेम विषयक की विधा रही है। उर्दू गजल सुरु में ही नहीं बल्की उसके बाद भी प्रेम रंग से सजी हुई थी। उर्दू गजल परम्परा बहुत समृध्द रही है। उसी के द्वारा गजल हिंदी ही नहीं बल्की भारत की अन्य भाषाओं में लिखी जा रही है। जैसे मराठीए गुजराती, पंजाबी आदी हिंदी भाषा में गजल लिखने का प्रयास बहुत गजलकारों ने किया हैए''हिंदी में इसे शमशेर और त्रिलोचन ने गले लगाया है। गुजराती में चीनु मोदी और मरीज जैसे कलाकारों ने इसे अपनाया हैए मराठी में सुरेश भट्ट और मंगेश